



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 95 बुलेटिन अवधि: 13-17 दिसम्बर, 2017 दिन: मंगलवार दिनांक: 12 दिसम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	13-12-2017	14-12-2017	15-12-2017	16-12-2017	17-12-2017
वर्षा (मिमी0)	8	2	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	23	24	23	23
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	09	08	07	07
बादल आच्छादन	घने बादल	बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	85	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	50	50	45	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	006	006
वायु की दिशा	दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम	पश्चिम-उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (05 से 11 दिसम्बर, 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से मध्यम बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 20.0 से 27.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.6 से 13.6 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 84 से 98 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 42 से 76 प्रतिशत एवं हवा 1.7 से 3.6 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

❖ जौ की पछेती दशा में बुवाई हेतु संस्तुत किस्में- ज्योति, प्रीति, मंजुला, जागृति का चुनाव करें। प्रति हैक्टेयर 100-110 कि0ग्रा0 बीज का उपयोग करें। 18-20 से0मी0 के कतारों में बुवाई करें। बुवाई दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।

- ❖ समय से बोए गए गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद आवश्यकतानुसार प्रथम सिंचाई करें। प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद जब खेत चलने लायक हो जाए तब बचे हुए नाइट्रोजन की आधी मात्रा का टॉपड्रेसिंग अपराहन में करना अधिक प्रभावी होता है।
- ❖ गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45–50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही है साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते हैं।
- ❖ समय से बोए गई चनें की फसल में दो बार निराई-गुड़ाई करें। पहली बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरा पहली सिंचाई के बाद बुवाई के 45–50 दिन बाद करें।
- ❖ विलम्ब दशा में 15 दिसम्बर तक मसूर की बुवाई पूरी कर लें। बुवाई के 25–30 दिन बाद निराई गुड़ाई करें।

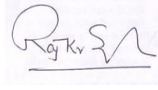
उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैंगन के मुझाने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। यदि पूरा पौधा सूख रहा हो तो इसी घोल से जड़ों की सिंचाई करें।
- ❖ टमाटर के मुझाने की अवस्था में ट्राइकोडर्मा हरजियानम या सूडोमोनास फ्लोरोसेंस का 8 से 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर संक्रमित पौधों व उसके आस पास के पौधों में छिड़काव करें।
- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर में उपरी पत्तियाँ सिकुड़ने या चित्तकबरी होने की स्थिति में संक्रमित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें तथा रोगवाहक कीटों के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- ❖ गोभी वर्गीय सब्जियों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ फोमा ब्लाइट के नियंत्रण के लिए आवश्यकता पड़ने पर 0.3 प्रतिशत कॉपर आक्सीक्लोराइड (3.0ग्राम/लीटर) का छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ बागों की गहरी जुताई करें, जिससे मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाले वाले कीट की वे अवस्थाएँ जो जमीन में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती हैं, नष्ट हो जाये।
- ❖ पपीता, आम एवं लीची के नये रोपित पौधों को पाले से बचाने हेतु सूखी घास-फूस एकत्रित कर लें ताकि इन पौधों को पाले से बचाने हेतु 15 दिसम्बर एवं उसके बाद कवर किया जा सके।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0 या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय-भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।
- ❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा दें।

- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।



डा० आर० के० सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर